रास्ते में मिली एक लड़की

बाहर बहुत बारिश आ रही थी। कक्षा मे सभी बच्चे शोर मचा रहे थे। यह सब देखकर भी मास्टर जी ने कुछ नही बोला।

क्यों? मास्टर जी को क्या हुआ? सभी बच्चे सोचने लगे। पर इन सब बात में ध्यान देने में सीता की इच्छा नहीं थी। वह बाहर एक पेड़ों में बारिश में फसी चिडियों को देख रही थी।

"सीता! इधर ध्यान दो!"

सीता चौकन्ना होकर आगे मुड़ा। लगता है मास्टर जी की होश वापस आ गया। आसपास में बैठे बच्चों की बात सीता सुनी।

"सीता तुम्हें कक्षा में ध्यान देना है। अगर फिरसे बाहर देखी तो मैं तुम्हें वही बारिश में बेचूँगी।

सीता उसकी चेहरा नीचे की ओर रख लिया।

सीता के लिए यह दिन उतना अच्छा नहीं था। वह कक्षा के बाहर खड़े रही थी। उसके पास छाता नहीं थी। उसकी घर भी बहुत दूर में थी।
सीता की घर पहाड़ के पीछे में हैं। वहाँ जाने के लिए उसे बीस किलोमीटर है। आधा बस ~~औ~~ में और आधा उसे चलना है। यह सब सोचते सोचते सीता ने दौड़ने की तय की।
वह बारिश में भीगी भीगी चलने लगी। जब वह बस रुखने की जगह पहुँची तो मास्टर जी को सीता रास्ते में मिली। मास्टर जी कार में था। वह सीता को देखा और कार रोख दिया।
"अरे सीता...... तुम इस बारिश में पहाड़ छड़ने की खयाल में हो क्या ?"
~~घर सीता को बारिश में क्या कैसे सुनेगी ?~~ सीता कार के और देखी पर उसे मास्टर जी की आवाज नहीं सुनी।

मास्टर जी उसके लिए कार का दरवाज़ा खुला। सीता बिना मन से कार के अंदर घुस गई।

"अगर तुम इस बारिश में ऐसे चलोगे तो तुम भी तुम्हारी माँ की जैसे बिस्तर में ही रहना होगा।"

सीता को यह वाक्य उसकी मन में छू गया। दरअसल सीता की माँ को न्युमोनिया थी। वह बारिश में भागी क्योंकि उसे जल्दी अपनी माँ की पास मिलनी थी। ~~उसकी पिता की मृत्यु~~ जब सीता सिर्फ पाँच महीने की थी तो उसकी पिता की मृत्यु हो गई। वह अपनी माँ के साथ अकेली रहती थी।

सीता की माँ अपने बेटी के सोच में हमेश चिन्तित रहती थी। इसलीए वह उसे बीस किलोमीटर दूर की अंग्रेजी मीडियम स्कूल में

बेचती थी। क्योंकि उसकी अच्छी पढ़ाई हो। पर यह बात मास्टर जी को कैसे पता चला? यह उस दिन की बात है जब सीता अपनी माँ के साथ अस्पताल में जा रही थी। जब वे सबज़ी मंडी में पहुँची तो तब वहाँ बहुत बीड़ थी। जब सीता ने रास्ते के उस-पार एक नन्हें नन्हें चिड़ियाँ बेचने वाले को देखा तो वो उसकी माँ की हाथ छोड़कर भागी। तभी अचानक से एक बस आया। हे भगवान! किसी तरह सीता ने मरण से बच गया। ~~वह जल्दी चिड़ियाँ को देख के भूलाकर~~ देखा। ~~तभी वह चिड़ियाँ~~ यह शौक से सीता रास्ते में रोने लगी। ~~तभी~~ उसे रोने देखकर भी किसी भी व्यक्ति उसके पास नहीं आया। तभी भगवान

के जैसे उसके सामने एक व्यक्ति आया ?

"क्यों रो रहे हो बेटी ?"

"मैं... मैं... मेरी माँ... मुझे माँ के... पास... चलना है... माँ कहाँ है माँ..." सीता रोती रही।

उस व्यक्ति को समझ आया कि यह लड़की ~~बच्ची~~ ~~अपनी माँ~~ से बिछड़ी है।

तभी सीता की माँ दौड़कर आ गई

"सीता! तुम ~~क्यों~~ कहाँ चली गई थी मैंने तुम्हें कितना ढूँढ लिया।

माँ उसे बाँधने लगी।

सीता और भी रोने लगी।

"~~अरे~~ अरे उसे डाँटिए मत। बेचारी डरी ~~गई~~ हुई है।"

"अरे आप कौन हो? माफ करना मैंने आपको देखा नहीं। यह बेटी मेरी है वह मेरे हाँथ छोड़कर भाग गई।"

"अच्छा। ऐसी बात है। अच्छा हुआ आप आ गई।" उस व्यक्ती मुस्कुराते बोला।

"आप कौन हो जी?" ~~मुझे~~

"मैं? मैं तो आसपास की अंग्रेजी स्कूल की मास्टर हूँ।"

"अच्छा ऐसी बात है। दरसल ..."

"क्या बात है?"

"मेरी बेटी पाँच साल की है। अगर आप मानो तो क्या इसे मैं आपके स्कूल में भेज दूँ?"

"क्यों नहीं? मैं इसे अपनी बेटी की तरह ध्यान रखूँगी।"

माँ को खुशी हुई। "दरसल मेरी हालत उतना अच्छी नहीं है और मेरा पती एक आक्सिडन्ट में मर गया।"

"उसकी चिंता आप मत लीजिए मैंने कहाँ न मैं यह लड़की को मेरी बेटी की तरह पालूँगी।"

~~अरे~~ यह सब सोचते सोचते सीता खिड़की की ओर देखी। वहाँ उसे अपनी घर की पहाड़ थोड़ा थोड़ा देख रही थी।

जब कार सीता की घर के पास आ गई तो वहाँ बहुत भीड़ था। सब लोग सीता की घर के सामने खड़ी थी। सीता को डर लगा। वह जल्दी कार से उतरकर भागी। पर जब वह अंदर आया तो एक सफेद वस्त्र में उसकी माँ को बाँध लिया था।

सीता नीचे गिर गई। वह आवाज़ से रोने लगी। उसके चेहरा आँसु से भरा और पूरी चेहरा बदली। यह सब देखकर मास्टर जी दरवाजे के पास बैठी। वे सीता इस हालत न देख पाई।

सीता को वहाँ औरते घर के उसे वहाँ से ले गया।

रात हो गई। सभी लोग अपने अपने घर वापस गई। अब सिर्फ सीता बाकी थी। उसकी माँ अब इस दुनियाँ में नहीं रही। वह फिरसे रोने लगी।

तभी मास्टर जी आया।

"मैने तुम्हारी माँ से वादा किया था की मे तुम्हे मेरी बेटी की देखुँगा। क्या तुम अब मेरे घर पर रहोगी?"

"~~सीता रोने~~ सीता और भी रोने लगी। वह मास्टर जी के साथ गई। मास्टर जी के पत्नी उसे गली लगई। मास्टर और उनके पत्नी को उनके अपने बच्चे नही थे। वे दोनों सीता को अच्छे विद्याभ्यास से पाला। सीता अपनी माँ की इच्छा जैसे एक डॉक्टर बन गई थी।

~~वह~~ सीता अपनी माँ को कभी नही भूला। ~~वह~~ वह अपने मास्टर जी का इज़्ज़त मानता था और ~~वह~~ उनके पत्नी का भी। ~~जब~~ एक दिन जब मास्टर जी जो अब सीता की पिता के स्थान में थे ~~सीता को देखके~~ उसके बारे अपनी पत्नी से कहाँ -

"मैने कभी नहीं सोचा था यह लड़की जो ~~मैने~~ मुझे एक दिन रास्ते मे मिली लड़की है एक दिन मेरा बेटी बनेगा।" ~~उसक~~ यह बात ~~कहकर~~ सुनकर उनके पत्नी के आँखों मे आँसु भर गयी।

———